– प्रेम कुमारी

नरेंद्र कोहली के रामकथा उपन्यासों में राजनीतिक यथार्थ एवं आधुनिकता का बोध

शोध सारः साहित्यकार जिस समाज में रहता है,वहां की प्रत्येक अच्छी–बुरी परिस्थितियां उनको प्रभावित करती है, उनके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है, और यही कारण है कि पाठकों को उनकी रचनाओं में अक्सर सामाजिक–राजनीतिक जनजीवन के दर्शन होते हैं। युगों से पुराकथाओं ,प्रतीकों,एवं बिम्बों आदि अनेक माध्यमों की सहायता से समाज की यथार्थ छवि को रचनाओं में उतारने का प्रयास किया जाता रहा है। पुराकथाएं अपने कालजई चेतना के कारण सहस्त्रों वर्षों से किसी न किसी रूप में अवस्थित रही है। डॉ. नरेंद्र कोहली को भारतीय दर्शन और पौराणिक ग्रंथों व मूल्यताओं के प्रति अपार श्रद्धा व आस्था रही है। उनके लेखों में राजनीतिक दर्शन,में जीवन की समस्याओं की झलक मिलती है। कोहली जी ने रामायण, रामचरितमानस, रामकथा के प्रसंग एवं घटनाओं को वर्तमान संदर्भों से जोड़कर यथा स्थिति से अवगत कराने का एक सफल प्रयास किया है ।'दीक्षा',अवसर',संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' खंडों में विभक्त कोहली जी के अभ्युदय राम कथात्मक उपन्यास की कथा में वर्णित प्रसंग पौराणिक होते हुए भी समकालीन समस्याओं एवं घटनाओं का स्मरण कराते हैं। इस उपन्यास में राम की पौराणिक कथा को आधुनिक बोधगम्यता के साथ वर्णित किया गया है। एक ओर जहां वर्णित अनेक प्रसंग वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, नारी विषयक, समाज सुधार के कार्यों को यथार्थ स्वरूप प्रदान करते हैं, वहीं पर दूसरी ओर उसमें उपस्थित रामकथा के प्रमुख पात्र पाठकों के समक्ष स्वयं को आधुनिक रूप में चित्रित करते हैं ।इस प्रस्तुत शोध में नरेंद्र कोहली के रामकथा उपन्यासों में निहित राजनीतिक यथार्थ को वर्णित करने का प्रयास किया गया है।

बीज शब्द: यथार्थ, संघर्ष, पौराणिक, समसामयिकता,शासनतंत्र, शोषण, अनाचार

साहित्य का संबंध एक ऐसी वस्तु से है, जो हमारे बाहरी इंद्रिय ज्ञान से परे है, जो अनेकों में व्याप्त होती हुई भी एक और अनंत है। प्रेमचंद्र ने हंस में लिखा था "साहित्य उस उद्योग का नाम है जो आदमी ने आपस के भेद मिटाने और उस मौलिक एकता को व्यक्त करने के लिए किया है, जो इस जाहिरी भेद की तह में पृथ्वी के उदर में व्याकुल ज्वाला की भांति छिपा हुआ है। जब हम मिथ्या विचारों और भावनाओं में पड़कर असलियत से दूर जा पड़ते हैं,तो साहित हमें उस सोते तक पहुंचाता है, जहां रियलिटी अपने सच्चे रूप में में

प्रवाहित हो रही है।"[1]साहित्य कभी भी पूर्ण स्वतंत्र और समाज निरपेक्ष नहीं होता, वैसे ही साहित्य का इतिहास भी समाज के इतिहास से कटा नहीं होता। साहित्य में परिवर्तन सामाजिक परिवर्तनों से प्रेरित और प्रभावित होते ही हैं,तो कई बार वे सामाजिक परिवर्तनों को भी प्रभावित करते हैं। साहित्य के समग्र रूप के परिवर्तन और विकास को समाज के इतिहास की सापेक्षता में ही समझा जा सकता है, लेकिन सावधानी और समझदारी के साथ।

70 दशक के अंत में नरेंद्र कोहली के अठारह सौ पृष्ठों का राम कथा पर आधारित उपन्यास 'अभ्युदय' उपन्यास ने हिंदी जगत को आंदोलित कर दिया था। कोहली जी के अभियान ने हिंदी साहित्य को भारतीय संस्कृति से परिचित करवाया। भगवान राम की कथा को आधुनिक संदर्भ में दिखाया गया है। रामायण के पात्रों का मानवीकरण किया गया है। यहां राम एवं सीता अवतार नहीं समाज सुधारक हैं, भविष्य दृष्टा है ,एवं अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले पात्र हैं ।उनके लिए बनवास मात्र वचन पालन हेतु नहीं था, बल्कि मध्य और दक्षिण भारत में एक आंदोलन था, सुधार अभियान था। अभ्युदय में जीवन मूल्यों एवं अमृत सांस्कृतिक परंपरा के दर्शन होते हैं। मानवीय जिजीविषा व्यक्तित्व के अनुरूप हर किसी को जीवन शक्ति प्रदान करती है। मनुष्य समाज को साहित्यकारों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए कि मारक परिस्थितियों के बीच वे जीवन संबल प्राप्त करते हुए मानवीय उदारता का स्तुत्य प्रयास करते हैं।

आजाद भारत में एक साथ पनप रहे मानवीय गुण और अमानवीय क्षुद्रताओं; पूंजीवादी क्रूरता एवं जनवादी प्रतिबद्धता को कोहली जी के रचनाओं में आसानी से देख सकते हैं। स्वयं कोहली जी कहते हैं कि"अति संवेदनशीलता की स्थिति में मैंने अपने समाज और देश में फैले हुए उस आतंक का अनुभव किया जिसके मूल में राजनीतिक सत्ता थी बात यहीं तक समाप्त नहीं हो गई, मैंने अपनी कल्पनाशीलता में उस समाज का निर्माण किया जो इस सारी व्यवस्था का विरोध करता है और तब यह भी महसूस हुआ कि यदि कभी सत्ता का विरोध हुआ तो उसका दमन कब और कैसे होगा?"[2] कोहली जी के आस पास छोटी मोटी कई ऐसी घटनाएं हुई जिससे कोहली जी को लगा कि ये घटनाएं रामकथा से मिलती है ये कथा किसी और काल की न होकर समकालीन लगती है जब कोई समर्थ जन कोई महान जन सामान्य से जुड़ता है, तो अवतार की श्रेणी तक चला जाता है।

'दीक्षा' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थः–––'दीक्षा'उपन्यास पौराणिक होते हुए भी अपने अंदर आधुनिक युग के सत्य को समेटे वर्तमान राजनीतिक, यथार्थ को उजागर करता है। वर्तमान समाज में फैली भ्रष्टाचार, अनाचार, शोषण और मूल्य विघटन जैसे सामाजिक बुराइयों के यथार्थ को खींचने के लिए

उपन्यासकार कोहली जी ने प्रचलित राम कथा उपन्यास में राजा दशरथ के साम्राज्य में रह रही जनता सामाजिक बुराइयों से घिरी नजर आती है। रामकथा आधारित उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य ही समकालीन जीवन की झलक को पौराणिक एवं ऐतिहासिक परिवेश के माध्यम से प्रस्तुत करना रहा है। इस उपन्यास में कथा के दौरान ऐसे कई प्रमुख प्रसङ्ग को दर्शाया गया है, जो कहीं न कहीं वर्तमान संदर्भ से समानता रखता है। कोहली जी यथार्थ की विविध प्रकृति और उनके जटिल स्वरूप की पहचान तथा समकालीन ढांचे में परिवर्तन के साथ श्रेष्ठतर समाज व्यवस्था की चिंता में नरेंद्र कोहली जी को अतीत का स्मरण हो आता है, उन्हें लगता है कि समस्याओं के स्वरूप में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है अगर कुछ बदला है,तो केवल परिस्थितियां ही बदली हैं।"अतः अतीत और वर्तमान की समानांतरीय समस्याओं के निदान के लिए आधार और निवारणीय प्रक्रिया के ढंग भी हमें समसामयिकता पूर्ण और प्रासंगिक रूप में ही अपनाने होंगे, तभी आधुनिक आतताई रूपी रावण और कंस का विनाश हो सकेगा; स्वर्ण मृग वेषी कपटी मारीच और निज बंधु–बांधवों के मुख के ग्रास को हड़प कर हजम करने वाले कौरवों से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।"[3]

'दीक्षा' उपन्यास की कथा का मूल स्रोत बांग्लादेश की राजनीतिक स्थिति है। बांग्लादेश के युद्ध ने नरेंद्र कोहली को प्रभावित किया था। 'साहित्य यात्रा' पत्रिका में एक साक्षात्कार के दौरान कोहली जी ने यह स्वीकार किया है कि "सन् 1971 में जब युद्ध हुआ बांग्लादेश का और यह सूचना आई कि बांग्लादेश के बुद्धिजीवियों को सामूहिक रूप से मारने के षड्यंत्र किए गए हैं तो मुझे पुराण याद आए ।"[4] कोहली जी द्वारा यह कहने से स्पष्ट होता है कि बांग्लादेश में पाकिस्तानी सेना द्वारा जो अत्याचार और क्रूरता की गई और उसके विरोध में वहां के बुद्धिजीवियों में जिस प्रकार की प्रतिक्रिया हुई इन दोनों ने ही उन्हें इस उपन्यास की रचना के लिए प्रेरित किया ।उन्होंने इस घटना को विश्वामित्र के आश्रम में हुए राक्षसों का उत्पाद एवं राक्षसों द्वारा ऋषियों की नृशंस हत्या के संदर्भ को आधुनिक रूप में दर्शा कर वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। उपन्यास में कथा का आरंभ सिद्धाश्रम में हो रहे राक्षसों के उत्पाद एवं अत्याचार से प्रारंभ होता है। आश्रम में हुई घटना को लेकर वर्तमान संदर्भ में राजनीतिक दायित्वहीनता को उजागर किया है।

'दीक्षा'उपन्यास कथा में बताया गया है कि आधा जंबूद्वीप रावण के आतंक की चपेट में आ चुका है लेकिन राजा दशरथ राज महल में गृहक्लेश सुलझाने में ही व्यस्त रहते हैं,इधर पंचवटी में खर–दूषण और सूर्पनखा अपने सैनिक शिविर स्थापित कर रखी है। संपूर्ण आर्यावर्त आपातकाल एवं संकटग्रस्त परिस्थिति में है,ऐसे समय में भी राजा दशरथ जरा भी गंभीर नहीं दिखते हैं। कोहली जी स्वयं कहते हैं कि "मुझे महर्षि

विश्वामित्र स्मरण हो आएं, वे राजा रहे थे, राजर्षि थे, शास्त्रों के ज्ञाता थे ।सैन्य संचालन कर सकते थे, किंतु फिर भी उनके आश्रम में राक्षस अपनी मनमानी कर रहे थे। जब इच्छा होती थी रक्त और मांस का खेल खेल जाते थे इतना आतंक फैला देते थे कि वहां अध्ययन–अध्यापन, यज्ञ–योग, पूजा–उपासना, साधना–तपस्या कुछ भी ना हो सके ,एक ओर चक्रवर्ती सिरध्व जनक का राज्य था दूसरी ओर चक्रवर्ती दशरथ का; किंतु वे दोनों ही चतुरंगिनी सेनाओं के स्वामी होकर भी सिद्धाश्रम की रक्षा नहीं कर पा रहे थे। जिसके पास भी शारिरिक बल और दुष्ट बुद्धि हो,वह अपनी मनमानी कर सकता था। ऐसे में ऋषि विश्वामित्र राम की शरण में आए थे।”[5]

कोहली जी ने कॉलेज में हुए उन घटनाओं का पौराणिक संदर्भ में जोड़कर पाठकों के सामने वही रूप प्रस्तुत किया है। जब अन्याय हो रहा होता है तो कोई किसी की मदद को नहीं आता है। पुलिस और सरकार से जनता निराश होकर हार जाती है। ऐसे में ही समय में हम सभी को एक युगपुरुष श्री राम की आवश्यकता है, जो इन अन्याय को मिटा सकें,समाप्त कर सकें।

रामकथा में निषाद गहन के परिवार के शोषण को चित्रित किया है। राम कहते हैं कि “ये लोग आर्य संस्कृति में पोषित होकर भी राक्षस हो गए, राक्षसों के सहायक हो गए। अपने राजसी अधिकारों का दुरुपयोग करने वाले, निरीह प्रजा को पीड़ित करने वाले, ये लोग आर्य नहीं है चाहे फिर भी ये लोग आर्य सेनानायकों के पुत्र ही क्यों न हों। ’आर्य’ किसी जाति, वर्ण, आकार, अथवा पक्ष का नाम नहीं है। वह मानवीय सिद्धान्त, आदर्श और महान् चरित्र का नाम है। जो अमानवीय कृत्य इन्होंने निषाद स्त्री–पुरुषों के साथ किए हैं, उन पापों के प्रतिकार इनके हाथ के लिए, इन राक्षसों के लिए, मैं न्यूनतम दंड प्रस्तावित करता हूं।”[6]राम कथा के अनुसार राम समाज में न्याय बोध को पुनः स्थापित करने के लिए तथा अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए पीड़ितों में जागृति पैदा करने का एक ठोस कदम उठा रहे थे। समसामयिक परिपेक्ष में इस संदर्भ का अधिक महत्व है, क्योंकि यह भारतीय समाज में व्याप्त अकर्मण्यता और शासन तंत्र में व्याप्त राक्षसी मनोवृति को प्रतिबिंबित करता है,और राजनीति के राक्षसी मुख को भी उद्घाटित करता है।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर विचार करते हुए विश्वामित्र यह चाहते हैं, कि जनकपुरी और अयोध्या के परंपरागत वैमनस्य को समाप्त करने के लिए और उस प्रकार राक्षसों से लड़ने के लिए आर्य राजाओं के बीच एकता स्थापित करने के लिए राम और सीता का विवाह आवश्यक है। और राम को सीता से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।’दीक्षा’ के इस खंड में यह चित्रित किया गया है, कि राजनीतिक यथार्थ हर समाज में हर युग में विद्यमान यथार्थ ही है। निरीह जनता पर अमानवीय अत्याचार करने वाला राक्षस केवल त्रेता युग में ही नहीं हर युग में जन्म लेता है।

'अवसर' खंड में निहित राजनीतिक यथार्थः––––राजा दशरथ भय की आशंका से ग्रसित होकर नगर की रक्षा के लिए भरत के नेतृत्व वाली सेना को उतरी सीमांत पर नियुक्त करते हैं,और अपने अंगरक्षक दल के नायक चित्रसेन को अयोध्या की रक्षा का दायित्व सौपते हैं। महाबलाधिकृत इसे भी परंपरा के विरुद्ध और व्यवहारिक बताता है ,पर दशरथ मानने को तैयार नहीं थें । मन की इस उथल–पुथल के बीच दशरथ निर्णय लेते हैं, कि अधिकार– भोग करना है, तो विरोधियों को मार्ग से हटाना होगा।"यही राजनीति है।उसमें नीति क्या और अनीति क्या? सिद्धांत क्या और आदर्श क्या? राजनीति के सारे सिद्धांतों आदर्शों तथा नैतिकता का एकमात्र सूत्र है– विरोध उन्मूलन। विरोधी का उन्मूलन भी।.."[7] इस खंड में दशरथ के साम्राज्य पर कैकेई के बढ़ते प्रभाव को देखकर उनके मन में राजनीतिक भय उत्पन्न हो गया था और भरत की अनुपस्थिति में राम का राज्याभिषेक कर स्वयं को सुरक्षित कर लेना चाहते हैं। इसलिए उन्होंने यह कहा की "और आज से किसी राजकीय बंदी के विषय में अधिकारियों से पूछताछ नहीं की जा सकेगी। साम्राज्य की सुरक्षा के लिए आवश्यक होने पर किसी भी व्यक्ति को बिना अभियोग बताएं भी बंदी किया जा सकेगा।"[8] इस कथन से राजा की निरंकुशता का बोध होता है।

राम ने विश्वामित्र को वचन दिया था, कि समाज मे शांति और न्याय की स्थापना करेंगें।कोहली जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया कि राक्षसी बल तथा भ्रष्ट राजनीति सत्ता को अगर रोका न गया तो समस्त आर्यवर्त और देव भूमि को ग्रास लेगी "कोई संदेह नहीं कि बड़े यत्न से विकसित की गई प्रगतिशील ,न्याय पूर्ण, मानवीय संस्कृति तथा सामाजिक व्यवस्था को भी प्रतिकूल प्रतिक्रियावादी प्रतिगामी राजशक्ति अत्यंत थोड़े से ही समय में समाप्त कर सकती है, अतः मानव समता के सिद्धांत पर आश्रित न्याय पूर्ण समाज के विकास के लिए पहली शर्त है; राजनीतिक शक्ति को हस्तगत करना।"[9]

इस खंड में राजा दशरथ ने कैकई नरेश को हराकर आत्मसमर्पण करवाया था और कैकई का विवाह दशरथ से होना तय हुआ,लेकिन कैकई हठीली, उग्र ,तेजस्विनी, महत्वाकांक्षी तथा असाधारण सुंदरी थी। नरेंद्र कोहली जी ने राम के समक्ष कैकेई से कहलवाया है– "मैं वह धरती हूं राम! जिसकी छाती करुणा से फटती है,तो शीतल जल उमड़ता है ,घृणा से फटती है ,तो लावा उगलती है, दोनों मिल जाते हैं, तो भूचाल आ जाता है, आज मेरी स्थिति भूडोंल की है राम! मैं इस घर में अपने अनुराग का अनुसरण करती हुई नहीं आई थी। मैं पराजित राजा की ओर से विजयी सम्राट को संधि के लिए दी गई एक भेंट थी।"[10] कैकेयी को मानवता की दृष्टि से देखते हैं, तो अपराधी लगती है ,पर राजतंत्र में स्त्री के जीवन और स्वप्न से जिस प्रकार खिलवाड़ किया जाता है, उसे देखते हुए उसके खिलाफ कैकेयी जैसी स्त्रियों का विद्रोह अपराध नहीं कहा जा सकता।

'संघर्ष की ओर' उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ---संघर्ष की ओर' इस खंड में रामकथा की अनेक काल्पनिक प्रसंग एवं पात्रों की सहायता से चित्रकूट प्रसंग से पंचवटी प्रसंग एवं पंचवटी प्रसंग से सीता हरण ,तक की कथा प्रस्तुत किया गया है।इसके माध्यम से वर्तमान की यथार्थ घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। राक्षस राज रावण की राक्षसी अत्याचार एवं भ्रष्ट आचरण का जो स्वरूप दिखाया गया है ,उसकी वह तस्वीर वर्तमान की शासन व्यवस्था में बैठे राजनीतिक सत्ताधारियों के आचरण से मिलती है। इस कथा के अनुसार राक्षस राज रावण के साम्राज्य में कोई भी काम बिना रिश्वत के नहीं होता था। भ्रष्टाचार की जड़े निचले स्तर से राजकीय स्तर तक पहुंच चुकी थी और साधारण जन को भी छोटे–बड़े हर कामों के लिए घूस का सहारा लेना पड़ता था। आज आधुनिक समाज में भी साधारण जनता को किसी भी अधिकारियों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए उनके अधीनस्थ कर्मचारियों को ढेर सारे रकम देनी पड़ती है। वर्तमान व्यवस्था की इस कथा को कोहली जी ने मूर्त के माध्यम से परिलक्षित किया है। एक काल्पनिक पात्र को युथपति से मिलने के लिए स्वर्ण मुद्राओं की रिश्वत देनी पड़ती है। मूर्त की इस कथा को वर्णित कर कोहली जी ने वर्तमान शासन व्यवस्था को राक्षस राज की संज्ञा दी है एवं घूसखोरी और भ्रष्टाचार से ही साधारण जनता के काम होते हैं इसका वर्णन किया गया है।

'युद्ध'उपन्यास में निहित राजनीतिक यथार्थ---कोहली जी ने भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था को जो सभी स्तरों पर इस देश में फैली हुई है उसे समकालीनता का चोला पहना कर अपने अभ्युदय उपन्यास के अंतिम खंड युद्ध के माध्यम से वर्णित किया है। इस खंड में चित्रित शासकों एवं उनके शासन व्यवस्था संबंधित पौराणिक प्रसंगों ,पात्रों एवं घटनाओं के माध्यम से आधुनिक राजनीतिक सत्ता में मिलने वाली वृतियों जैसे भ्रष्टाचार, पदलोलुपता, कूटनीति गुंडाराज, राजनीतिक दायित्वहीनता, युद्ध की विभीषिका आदि का वर्णन किया गया है। किष्किंधा राष्ट्र में पूंजीवादी राष्ट्र लंका का कूटनायक एक मायावी सूरा तथा सुंदरी का प्रयोग कर और अविकसित राष्ट्र किष्किंधा के वानर सम्राट बाली को पूर्ण रूप से राक्षस अर्थात शोषक बना देता है। बाली का मायावी द्वारा जन शिक्षा के विरोध में प्रस्तुत तर्को से सहमत होकर सुग्रीव की शिक्षा व्यवस्था के प्रस्ताव को अस्वीकार करता है। बाली के द्वारा कहे गए इस कथन में वर्तमान संदर्भ में अपने देश के राजनीतिज्ञों पर विदेशी प्रभाव और विदेशी प्रेम का सशक्त तथा प्रमाणिक वर्णन किया गया है ,जो कि वर्तमान राजनीति के एक और यथार्थ चित्र को उजागर करता है। एक और प्रसंग में बाली की सरकार द्वारा शराब विक्रय के पक्ष में बाली के समक्ष आर्थिक मुद्दों से संबंधित तर्क दिया जाता है।

यह कथन आधुनिक पूंजीवादी सरकारों की नीतियों को प्रदर्शित करता है, बाली के पुनः आगमन से सत्ता का परिवर्तन होना ,विपक्ष का क्रूर दमन होना ,सुग्रीव के समर्थकों की हत्या होना, आदि वर्णित प्रसंगों के द्वारा आधुनिक विश्व की अनेक प्रांतों और सत्तापरिवर्तन फलस्वरूप दमन की प्रत्येक राजनीतिक परिस्थितियों को को प्रदर्शित किया गया है। रावण लंका की सत्ता का लोभी था उसके और सत्ता के बीच आने वाले हर रुकावट को किसी भी नीति से हटाने के वह पक्षधर था । सत्ता की लालसा में रावण द्वारा अपनाई गई यह गलत नीति के माध्यम से नरेंद्र कोहली ने समकालीन राजनेताओं और राजनीतिज्ञों के उस चेहरे को समाज के समक्ष चित्रित किया है ,जहां सत्ता पाने के लिए उनके द्वारा अक्सर गलत नीतियां अपनाई जाती है। राम के संगठन एवं मित्रों में फूट डालने के लिए रावण जिस कूटनीति का उपयोग करता है, वह देखने लायक है। जिस वानरों को वह तुच्छ कीड़े–मकोड़े समझता था, आज उन्हीं के पास उसने 'शुक 'नामक दूत को संदेश लेकर भेजा ,दूत रावण का संदेश सुनाते हुए कहता है कि "शत्रुता किसी की और युद्ध में प्राण देने कोई और आया है ,यदि मैंने राम की पत्नी का अपहरण किया तो, उसमें तुम्हें मुझ जैसे मित्र के विरुद्ध युद्ध करने की क्या आवश्यकता है? इस कंगले राम का कुछ भी दाँव पर नहीं लगा है ।इस युद्ध की जय–पराजय से निरपेक्ष वह दोनों स्थितियों में लाभ में ही रहेगा। युद्ध में सिवाय अपने और अपनी जाति के विनाश के सिवा तुम्हें और कुछ हाथ नहीं लगेगा।"[11]रावण द्वारा भेजे गए इस प्रस्ताव के माध्यम से नरेंद्र कोहली ने वर्तमान संदर्भ में अपने देश की राजनीति में आए षड्यंत्र और कूटनीति रूपी विष को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है।

लंका कांड प्रसंग में कोहली जी ने राम रावण के युद्ध को वर्तमान राजनीतिक यथार्थ बोध के साथ वर्णित किया है। युद्ध प्रायः राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के कारण होते हैं। युद्ध का तत्काल प्रभाव सामाजिक जीवन में सबसे अधिक पड़ता है। युद्ध के दौरान सैनिक सीमा पर लड़ते हैं, किंतु आंतरिक भागों में दहशत ,भय और महंगाई अपने चरम सीमा तक पहुंच जाती है। इस खंड में राम–रावण युद्ध प्रसंग का यह दृश्य "पराजय की ओर जा रहे रावण के राज्य में सैन्य संचय के लिए जाने वाली अधिकारियों को लंका के प्रत्येक घर के द्वार पर प्रतिशोध का सामना करना पड़ा था।...स्थान–स्थान पर धमकियों और बल का प्रयोग करना पड़ा। आज की सेना में अधिकांश सैनिक डरा–धमका कर लाए गए थे........लोग रावण और उसके राज्य को कोस रहे थे"[12] वर्तमान समय में युद्ध से होने वाली क्षति के दृश्य को चित्रित किया गया है।

युद्ध क्षेत्र में हताहतों और मृतकों की व्यवस्था का वर्णन भी समकालीन युद्धभूमियों की याद दिलाता है। युद्धभूमियों में सैनिकों के शवों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है, जो कि समकालीन सत्य को राम–रावण युद्ध प्रसंग के माध्यम से उजागर किया गया है। रावण द्वारा अपमानित करने पर विभीषण का

राजनीतिक शरणार्थी के रूप में राम के पास जाकर लंका की मुक्ति के लिए राजनीतिक समझौते करने की प्रसंग को वर्तमान समय में राजनीतिक समझौते को प्रतिबिंब करने का प्रयास कोहली जी ने किया है। वर्तमान समय में सभी स्तरों पर देश में उभरी भ्रष्ट राजनीति की व्यवस्था को आधुनिकता का ताना बाना पहना कर अपने रामकथा उपन्यासों के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष:–––नरेंद्र कोहली ने पौराणिक पात्र और ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से अपनी रचनाओं का सृजन कर आधुनिक जीवन के यथार्थ को उजागर किया है। 'दीक्षा', ' अवसर', 'संघर्ष की ओर' तथा 'युद्ध' इन चार खंडों में विभाजित 'अभ्युदय' उपन्यास की रचना कर कोहली जी ने अपने देश के वर्तमान यथार्थ स्वरूप से आधुनिक पाठकों का साक्षात्कार करवाया है। इस रामकथा के पात्र और प्रसंग वर्तमान युग और परिवेश के अनुरूप प्रस्तुत किए गए हैं। फैली हुई भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था की झलक को कोहली जी ने 'अभ्युदय' उपन्यास में चित्रित किया है। विश्वामित्र के सिद्धाश्रम में हो रहे राक्षसों के उत्पाद एवं अत्याचार की घटना संबंधी प्रसंग एवं राजा दशरथ की राजव्यवस्था एवं प्रजा की दुर्दशा प्रसंग जंबू दीप में रावण के बढ़ते आतंक एवं राक्षसी उपनिवेश को रोकने में राजाओं की विफलताओं संबंधी प्रसङ्ग वर्तमान राजनीतिक यथार्थ की झलक प्रस्तुत करती है।'अवसर' खंड में चित्रित अयोध्या में चल रहे राजनीतिक षड्यंत्र की प्रसंग को सन 1975 की आपातकालीन तानाशाही के भयानक रूप को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

भ्रष्टाचार, कूटनीति,युद्ध एवं वर्तमान राजनीतिक सत्ता में फैले अनैतिकता को 'युद्ध' उपन्यास के माध्यम से वर्णित किया गया है। नरेंद्र कोहली जी ने किष्किंधा के शासक एवं शासन व्यवस्था वर्तमान युग के राजनीतिक, राजनीतिज्ञों के शिक्षा, शराब संबंधी गलत नीतियों तथा सत्ता परिवर्तन एवं दमन की विविध राजनीतिक परिस्थिति को 'अभ्युदय' उपन्यास के चारों खंडों में समाहित राम कथा के पौराणिक प्रसंग एवं पात्रों के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक यथार्थ को उजागर किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–––

1. रामविलास शर्मा:आदर्श और यथार्थ , इग्नोउ 2007, एम एच डी 14 ,प्रेमचंद्र विवेचन
2. व्यंग्य यात्रा पत्रिका,अक्टूबर –दिसंबर 2009 सम्पादक –प्रेम जनमेजय वर्ष–5,अंक–21
3. हिंदी चेतना ,साक्षात्कार–डॉ अवनीश अवस्थी ,नरेंद्र कोहली विशेषांक ,अक्टूबर 2008 ,वर्ष10, अंक–40
4. साहित्य यात्रा ,संपादक –डॉ. कलानाथ मिश्र, जनवरी–मार्च 2015 साक्षात्कार
5. हिंदी चेतना पत्रिका, डॉ. नरेंद्र कोहली एक अप्रतिम प्रतिभा, अक्टूबर 2008 वर्ष 10 अंक 40
6. नरेंद्र कोहली ,अभ्युदय भाग–1 'दीक्षा खंड' डायमंड पॉकेट बुक्स(प्रा.) लि. नई दिल्ली, संस्करण 2016 पृष्ठ संख्या 73

7. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग–1,अवसर खंड’ डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड नई दिल्ली ,संस्करण 2016 पृष्ठ संख्या 196
8. वही पृष्ठ 201
9. वही पृष्ठ 247
10. वही पृष्ठ 227
11. नरेंद्र कोहली, ’अभ्युदय’ भाग –2,’युद्ध खंड’ डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली, संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 173
12. वही पृष्ठ 576

एम.ए ,एम.एड ,पी–एच.डी शोधार्थी, हिंदी विभाग

स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर, (मध्यप्रदेश)

मो---9340611654 , email--Jhaprem327@gmail.com